The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 2 Issue 1, 2019

मनोवैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

Mk0 dk'kyUn flag
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पटेल श्री टीकाराम पी0जी0 कॉलेज, साईं बगदाद मल्लवॉ, हरदोई (उ0प्र0)

वर्तमान युग में मनोवैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता और उसका महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह विज्ञान ऐसी समस्याओं का अध्ययन करता है, जिनसे आज हमारा सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं ज्ञान जहाँ एक ओर व्यक्ति के निजी विकास के लिये उपयोगी है वहीं दूसरी ओर समाज में रहते हुये विभिन्न समस्याओं के समाधान तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुविधा प्राप्त करने में भी इसका अत्यन्त महत्व है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन व्यक्ति का दृष्टिकोण ही परिवर्तित कर देता है। व्यक्तित्व के समुचित विकास तथा असामान्यताओं को दूर करने में भी मनोविज्ञान का योगदान सराहनीय है।

मनोविज्ञान मनुष्य के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान करवाता है मनोविज्ञान समाज और व्यक्ति में एक अन्तः सम्बन्ध और अन्तः निर्भरता बनाये रखता है और इन दोनों की अन्तःक्रियाओं के आधार पर ही व्यक्ति के व्यवहार निर्धारित होते है। प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो समाज विरोधी व्यवहार करते हैं। इन व्यवहारों के कुछ सामाजिक तथा मानसिक कारण होते हैं जिनको समझे बिना ऐसे व्यक्तियों का उपचार नहीं किया जा सकता। मनोविज्ञान इस काम में सहायता देता है। समाज में विघटन भी सामाजिक मनोवृत्ति है, जिसका मनोविज्ञान अध्ययन करता है सामाजिक व्यवस्था व संगठन को बनाये रखने के लिये समाज–विरोधी मनोवृत्तियों को कम करना जरूरी है, चूंकि मनोवृत्ति सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन विषय है, इस कारण यह विज्ञान अपने ज्ञान के आधार पर स्वस्थ मनोवृत्तियों के विकास के उपाय सुझाता है।

वर्तमान भारत में मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। हमारे देश में इस समय पुरातन मूल्य बदल रहे हैं और नवीन उनका स्थान धीरे–धीरे लेते जा रहे हैं। हमारे देश में औद्योगिक प्रगति, वैज्ञानिक प्रगति एवं यांत्रिक प्रगति शीघ्रता से हो रही है। हिन्दू समाज में पुरातन विवाह की रीति–रिवाज वर्तमान औद्योगिक प्रगति के समय में कोई महत्व नहीं रखते हैं किन्तु समाज के कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो पुराने रीति–रिवाज से चिपके हुये हैं, अतएव वह अपने को वर्तमान काल में कुसंयोजित पाते हैं। मनोविज्ञान का अध्ययन हमें इस सामाजिक एवं औद्योगिक प्रगति की गति के

सम्बन्ध में सूचना प्रदान करता है, और इस प्रकार हमें अधिक अच्छे ढंग से इस बात के लिये तैयार कर देता है कि हमारे समाज में प्रगति उचित दिशा में उचित ढंग से हो। वैसे भी हमारी बहुत सी असमानताएं सामाजिक पृष्ठभूमि लिये हुये होती हैं। उदाहरण के लिये–यह बहुत कुछ समाज के बन्धन के कारण ही होता है कि व्यक्तियों को अपनी अनकों इच्छाओं, भावनाओं और कामनाओं का दमन करना होता है। यह दमन की हुयी इच्छायें इत्यादि उनके व्यक्तित्व में विकास उत्पन्न कर देती हैं। मनोविज्ञान सामाजिक नियम, सामाजिक आचरण इत्यादि पर प्रकाश डालता है और कुछ विशेष प्रकार के असामान्य व्यवहार की व्याख्या करता है।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। युद्ध के विनाशकारी प्रभावों से बचने के लिये तथा संसार में शान्ति स्थापित करने के लिये, समूह एवं जाति–विभिन्नताओं, राष्ट्रीय तनावों, विभिन्न समाजों की राजनैतिक एवं आर्थिक दशाओं का अध्ययन करना पड़ेगा। यह अध्ययन हम मनोविज्ञान के द्वारा ही कर सकते हैं।

मानसिक अनुभूतियों का अध्ययन केवल अन्तर्निरीक्षण द्वारा ही सम्भव है। किसी प्राणी की अनुभूति का अध्ययन उसे छोड़कर अन्य के द्वारा सम्भव नहीं है। एक तो सब अपनी अनुभूतियों का अध्ययन कर नहीं सकते और जो कर भी सकते हैं उनके अध्ययन में आत्मगत दोष होता है, क्योंकि उस अध्ययन को उसे छोड़कर अन्य व्यक्ति सत्यापित नहीं कर सकता है। प्राणी के व्यवहार का ही अध्ययन वस्तुनिष्ठता के साथ सम्भव है। किसी के व्यवहार का निरीक्षण अन्य कोइ भी कर सकता है। अतएव व्यक्ति व उसके व्यवहारों को समझने व समझाने तथा उसका निरीक्षण करने का दायित्व जिस विज्ञान ने अपने ऊपर लिया है वह मनोविज्ञान के नाम से जाना जाता है।

मनोविज्ञान अंग्रेजी भाषा के 'साइकालॉजी' शब्द का पर्यायवाची है। साइकालॉजी शब्द लेटि भाषा के साइक तथा लॉजी शब्दों से मिलकर बना है। 'साइके' का अर्थ आत्मा है और 'लागस' का अर्थ है विज्ञान। इस प्रकार व्युत्पत्ति के अनुसार साइकालॉजी का अर्थ 'आत्मा का विज्ञान' हुआ। इसलिये प्रारम्भ में मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र की एक शाखा माना जाता था। दर्शनशास्त्र का विषय आत्मा–परमात्मा का विवेचन करना रहा है जबकि मनोविज्ञान का अध्ययन दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में होता रहा है और इसे आत्मा का विज्ञान समझा जाता रहा। मनोविज्ञान को विज्ञान की कोटि में लाने के लिये आवश्यक था कि आत्मा का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जाय इसीलिये जे0एस0 रॉस ने कहा है– 'पहिले मनोविज्ञान का अर्थ आत्मा से लगाया जाता था, परन्तु यह परिभाषा अस्पष्ट है क्योंकि इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर हमारे पास नहीं है कि आत्मा क्या है।''1

आत्मा का विज्ञान समझने की भूल सुधारने के पश्चात् मनोविज्ञान को मस्तिष्क का विज्ञान समझा जाने लगा। मस्तिष्क की क्रिया को मूर्त रूप न दे पाने के कारण मनोविज्ञान की इस परिभाषा को भी अधूरा समझा गया तत्पश्चात् मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा गया। जीवन एक चेतन प्राणी है चेतन होने के कारण प्राणी अपने वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है इस क्रिया–प्रतिक्रिया के चेतना से सम्बन्धित होने के कारण ही इसे चेतना का विज्ञान कहा गया। चूंकि मनोविज्ञान केवल चेतन

का ही नहीं अचेतन का भी अध्ययन करता है इस कारण मानव–व्यवहार के अध्ययन में चेतन, अर्द्धचेतन तथा अचेतन भी योग देते हैं। मैक्ड्गल ने चेतना के विज्ञान के रूप में चेतना की आलोचना करते हुये कहा है – 'चेतना पूर्णरूपेण बुरा शब्द है एवं मनोविज्ञान के लिये यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है कि यह शब्द सामान्य रूप से प्रयोग किया जाने लगा है।'2

बीसवी सदी के प्रारम्भ में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक नई उद्भावनायें हुयी। इन उद्भावनाओं के कारण मनोविज्ञान की दिशा, व्यवहार की ओर उन्मुख हुयी जिसके कारण उसे व्यवहार का विज्ञान कहा जाने लगा व्यवहारवादियों के अनुसार मनोविज्ञान व्यवहारों का विज्ञान है। मानव के व्यवहार अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं उन व्यवहारों की अभिव्यक्ति भी अलग–अलग ढंग से होती है।

मनोविज्ञान की विकास–यात्रा के पश्चात विभिन्न विद्वानों के मतों से परिचित होना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गयी परिभाषायें प्रयोगों, अनुभवों, चिन्तन एवं मनन का परिणाम हैं–विल्यिम मैकडूगल–'मनोविज्ञान एक ऐसा विधायक विज्ञान है, जिसमें जीवों के व्यवहारों का अध्ययन होता है।'3

मैक्ड्गल की यह परिभाषा काफी पुरानी समझी जाती है यह तो ठीक है कि मनोविज्ञान में व्यवहारों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा होता है, लेकिन इसके अन्तर्गत सृष्टि के समस्त प्राणियों का अध्ययन नहीं होता और यह सम्भव नहीं भी है यह परिभाषा अधिक व्यापक और मनोविज्ञान के पक्ष ही पक्ष–व्यवहार पर जोर डालने के कारण पूर्ण समझी जाती है।

वेलन्टाइन ने मनोविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार की है –'मनोविज्ञान मन का एक वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत बौद्धिक तथा संवेगात्मक अनुभवों के साथ–साथ प्रेरक शक्तियाँ, क्रियायें एवं व्यवहार सम्मिलित है।'4

इस परिभाषा में 'मन' शब्द ही भ्रान्तिजनक है यदि हम यह मान लें कि मन से लेखक का बौद्धिक, संवेगात्मक तथा क्रियात्मक अनुभवों से तात्पर्य है, तो भी परिभाषा अस्पष्ट है, क्योंकि मनोविज्ञान में इसके अतिरिक्त नाडी मण्डल, उसकी रचना तथा इन्द्रियों का अध्ययन व्यवहारों को समझने के लिये किया जाता है।

प्रसिद्ध शिक्षा मनोवैज्ञानिक चार्ल्स ई0 स्कीनर ने मनोविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार दी है–'मनोविज्ञान जीवन में उत्पन्न प्रत्येक प्रकार की परिस्थितियों के प्रति की गयी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रतिक्रियाओं से तात्पर्य प्राणी के सभी प्रकार के समायोजन, प्रक्रियाओं, क्रियाकलापों तथा देह के प्रस्तुतीकरण से है।'5

मन के अनुसार– 'मनुष्य को जीवन पर्यन्त समान वातावरण से विविध रूपों में अभियोजन करना होता है इन विविध अभियोजनों की प्रक्रिया में अनेक मानसिक प्रतिक्रियायें एवं शारीरिक प्रतिक्रियायें होती है। यह सब अध्ययन मनोविज्ञान का विषय है।'6

ई0जी0 बोरिंग 'मनोविज्ञान मानव स्वभाव का अध्ययन है' कहकर मनोविज्ञान को समझता है।7

बुड़वर्थ के अनुसार–'व्यक्ति के पर्यावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान ही मनोविज्ञान है।'8

एप्सटीन और सोन्ज के अनुसार– 'मनोविज्ञान में जीवन के व्यवहार की परीक्षा की जाती है। यहाँ व्यवहार से तात्पर्य जीव की सभी प्रकार की सम्भव अनुक्रियाओं से है तथा जीवन से तात्पर्य सभी जीवित प्राणियों से है।'9

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि–मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी के व्यवहारों जैसे सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजनों, अनुक्रियाओं और अभिव्यक्तियों आदि का अध्ययन किया जाता है तथा साथ ही साथ व्यवहार की अवस्था में उत्पन्न अनुभवों की चेतना का अध्ययन किया जाता है। व्यवहार और अनुभवों का अध्ययन प्राणी के पर्यावरण के सन्दर्भ में किया जाता है।